OM-21 - 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 27/01/2021 4:29 PM Page 1

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -23 अंक - 21 फरवरी -I-2021 (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 8.50

'विश्व शांति दिवस' के रूप में मनायी ब्रह्मा बाबा की 52वीं पुण्य तिथि

पाण्डव भवन-माउण्ट आबू(राज.)। ब्रह्माकुमारी संस्थान के संस्थापक पिताश्री प्रजापिता ब्रह्माबाबा के 52वें पुण्य स्मृति दिवस पर मुख्यालय,पाण्डव भवन परिसर सहित ज्ञानसरोवर तथा शांतिवन में भी अमृतवेले सुबह 3 बजे से ही सभी राजयोगी भाई-बहनें ईश्वरीय स्मृति में लीन व शांति स्तम्भ पर पिताश्री ब्रह्मा बाबा को याद कर उनके समान बनने की प्रेरणा लेते नज़र आए। इसके साथ ही बाबा का कमरा, बाबा की कुटिया तथा हिस्ट्री हॉल में भी जाकर ब्रह्मा बाबा की मनभावन और शिक्षाओं से भरी स्मृतियों को तरोताज़ा कर अपने दिल में बसाया व उनकी उपस्थिति की अनुभूति की। इस अवसर पर कलाकारों द्वारा पूरे पाण्डव भवन सहित सभी परिसरों की सुंदर-सुंदर फूलों से अद्भुत और आकर्षक सजावट की गई। इस मौके पर संस्थान की अति. मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि सभी को अपने आध्यात्मिक अध्ययन पर पूरा ध्यान देना चाहिए, तभी हम दूसरों के सवालों और संदेहों का संतोषजनक उत्तर दे सकते हैं। उन्होंने कहा कि यदि हम परमात्मा को याद करते हैं तो हम जहाँ भी हैं खुश रह सकते हैं। हमें परमात्मा के महावाक्यों और शिक्षाओं को अपनी आत्मा के लिए भोजन के रूप में महत्व देना चाहिए। राजयोगिनी ईशु दादी ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि हमने ब्रह्मा बाबा को हमेशा एक तपस्वी के रूप में देखा। उनके कर्म में समयबद्धता, स्वच्छता और कलात्मकता दिखाई देती थी। वे हमेशा कहते, जो कर्म हम करेंगे हमें देख और करेंगे, इसलिए हमेशा अपने कर्म पर हमारा अटेंशन रहना चाहिए। उन्होंने बताया कि ब्रह्मा बाबा ने परमात्मा के सर्व आदेशों को सत् प्रतिशत कर्मों के माध्यम से हमारे सामने रखा। वे जो कहते थे वो उनके कर्म में दिखता था। संस्थान के महासचिव राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर ने बाबा के साथ का अनुभव सभी को सुनाते हुए कहा कि आज का दिन ब्रह्मावत्सों के लिए एक श्रेष्ठ संकल्प लेने का दिन है। हम भी ब्रह्मा बाबा के कदमों पर चलकर उन जैसा फरिश्ता बनकर इस दुनिया में रहें। मौके पर भाई जी ने विश्व के सभी ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र के ब्रह्मावत्सों को शांति, सद्भावना व समरसता का वातावरण बनाने के लिए प्रेरित किया। राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि ब्रह्मा बाबा ने आध्यात्मिकता को अपने हर कर्म में अपनाया तथा परमात्मा के निर्देशों का सम्पूर्ण रूप से पालन करते हुए सभी के लिए आदर्श बने। इसीलिए वे सभी के प्रजापिता ब्रह्मा कहलाये।

स्मृति दिवस पर फूलों से सजा परिसर का हर कोना

फ्रूटफुल अभियान का आगाज़

जयपुर-वैशाली नगर। ब्रह्माकुमारीज़ वैशाली नगर सेवाकेन्द्र में 'फ्रूटफुल जयपुर कैम्पेन' का शुभारंभ किया गया। जिसके तहत शहर भर में आम, जामुन, अमरूद आदि फलों के वृक्ष लगाए जाएंगे। इसी के साथ www.fruitfulljaipur.com वेबसाइट का विमोचन भी किया गया। मौके पर ब्र.कु. चंद्रकला दीदी, पार्षद रमेश चंद्र गुप्ता, औरैया के पूर्व मेयर अरविंद शुक्ला तथा गणमान्य लोग उपस्थित रहे। कैंपेन के शुभारम्भ पर वैशाली नगर सेवाकेन्द्र के साथ सर्व प्रथम वैशाली नगर सरकारी डिस्पेंसरी में भी फलों के वृक्ष लगाये गए। इस अवसर पर मेडिकल ऑफिसर डॉ. सुनीता थाकन तथा स्टाफ मौजूद रहे। इस मौके

पर ब्र.कु. सुषमा दीदी ने कहा कि हमारी सतयुगी संस्कृति के अनुसार देवी-देवताओं का भोजन फल ही होता है। यदि हम फलों के वृक्ष लगाते हैं तो फलों के साथ-साथ हरियाली भी होती है। प्रकृति की रक्षा के लिए हम सभी को अपना कर्त्तव्य समझते हुए एक साल में कम से कम 7 वृक्ष अवश्य लगाने चाहिए। कार्यक्रम के दौरान अभियान का संपूर्ण विवरण देते हुए प्रो. ब्र.कु. मुकेश ने बताया कि एक साल में एक मनुष्य को 7 वृक्षों के द्वारा प्रदान की हुई ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है। यदि हमने आज के समय को देखते हुए पर्यावरण की ओर ध्यान न दिया तो मनुष्य का जीवन संकट में पड़ सकता है। इस अभियान के द्वारा जन-जन में जागृति लाने के साथ ही साल भर में 500 फलदायक वृक्ष लगाने का लक्ष्य रखा गया है।

युवा दिवस पर संकल्पबद्ध हुए युवा

समाज के हर वर्ग से जुड़े युवाओं ने लिया भाग

बीना-म.प्र.। राष्ट्रीय युवा दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ के युवा प्रभाग द्वारा 'वैश्विक शांति के लिए युवा' प्रोजेक्ट के उद्घाटन पर थाना प्रभारी कमल निगवाल ने महिलाओं का सम्मान करने और समाज में हो रहे अपराध के नियंत्रण के लिए पुलिस को सूचित करने की अपील की। चौकी प्रभारी लखन ने कहा कि पुलिस में कई युवा ईमानदारी, स्पष्ट कार्यशैली के साथ समाज हित में बेहतर कार्य कर रहे हैं। सेवानिवृत्त नायब सूबेदार नारायण सिंह ने कहा कि परिवर्तन के लिए परमात्मा की नज़रें भी युवाओं पर है, इसलिए युवा अपनी ऊर्जा को सकारात्मक कार्यों में लगाएं। एस.आई. प्रतिभा मिश्रा ने युवतियों को सुरक्षा के टिप्स दिए और कहा कि महिला के विपत्ति के समय सहयोग देने पर सी.एम. द्वारा सम्मानित किया जाएगा। ब्र.कु. सरोज दीदी ने युवाओं को समाजहित में कार्य करने और अपना जीवन चरित्रवान बनाने का आह्वान किया। ब्र.कु. जानकी दीदी ने कहा कि यदि युवा लक्ष्य के साथ आध्यात्मिकता को जीवन में धारण कर आगे बढ़ेंगे तो सफलता निश्चित है। उन्होंने युवाओं को धीरज व संयम अपनाकर परिवार एवं समाज के सभी वर्गों के प्रति सद्भावना रखते हुए अहिंसक व शांतिपूर्ण विश्व के लिए संकल्पबद्ध कराया।

जम्मू। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा विश्व भर में हो रही ईश्वरीय सेवाओं से अवगत कराने के पश्चात् उपराज्यपाल मनोज सिन्हा को परमात्म स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुदर्शन बहन, राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मल बहन, ब्र.कु. रविन्दर, ब्र.कु. सुभाष तथा अन्य।

विकास के साथ-साथ मन की शांति भी ज़रूरी

रामपुर-मनिहारन(उ.प्र.)। ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम में भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष व राज्यसभा सांसद कांता कर्दम ने कहा कि विकास के साथ-साथ मनुष्य के लिए मन की शांति भी बहुत ज़रूरी है। मन की शांति के लिए ईश्वर से लगन होनी चाहिए। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में आकर मुझे बहुत ही सुखद अनुभूति हुई है। उन्होंने कहा कि मनुष्य को किसी से भी किसी भी तरह का भेदभाव नहीं करना चाहिए। क्योंकि उस ईश्वर ने स्वयं कोई भेदभाव नहीं किया। सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. संतोष दीदी ने कहा कि सभी मनुष्य एक ही ईश्वर के बन्दे हैं और सुख-दुःख जीवन का हिस्सा है। सच्चे और अच्छे लोग वही होते हैं जो किसी भी परिस्थिति में उस ईश्वर को नहीं भूलते। ईश्वर अपने बन्दों की परीक्षा लेते हैं इसलिए विचलित हुए बिना सत्य और प्रेम के मार्ग पर चलते रहना चाहिए। इस दौरान ऋषिपाल जी, डॉ. अजब सिंह, राजकुमार जी, दीपक जी, श्रीवाल जी, मनोज शर्मा, बॉबी, ब्र.कु. सुशील, ब्र.कु. कोमल, ब्र.कु. पूजा, ब्र.कु. सरिता आदि मौजूद रहे।

OM-21 - 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 27/01/2021 4:29 PM Page 2

दुत्कारें नहीं... दया करें

ब्र.कु. गंगाधर

हम जिस महानतम धर्म की पुनर्स्थापना में लगे हुए हैं, यदि परमपिता परमात्मा के गुण, कर्म और स्वभाव को धारण नहीं करेंगे तो धर्म की स्थापना कैसे होगी! हम अपनी दिनचर्या में भी यदि और किसी प्रकार का चार्ट नहीं भी रख सकते तो कम से कम ये चार्ट तो रखें कि हमने कितनों को सुख दिया, संतुष्ट किया और सांत्वना दी। क्या हमने किसी पर किसी भी प्रकार से गुप्त दया की? हमने किसी को दुःख, वेदना, पीड़ा या पछाड़ तो नहीं दी? यदि दी, तो हमपर मार पड़ेगी। भगवान ने कह दिया है कि दुःख दोगे तो दुःखी होकर मरोगे। क्या विश्व के इतिहास में ऐसा कोई व्यक्ति हुआ है जिसने निर्दयता से व्यवहार किया हो और उसपर ऊपर वाले की दया हुई हो? 'परमात्मा की दया के बिना तो हम डूब जायेंगे, हमें तारेगा कौन और पार उतारेगा कौन? अतः मंत्र यह है कि 'कर दया तो होगी तुझपर दया।'

दया का एक रूप क्षमा है। किसी से कोई छोटी-छोटी भूल हो गई हों तो उसे समझा कर सावधान कर दो। भविष्य के लिए चेतावनी दे दो या आँख दिखा दो या बड़ी भूल हुई हो तो उससे बोल-चाल, लेन-देन, आना-जाना कम कर दो या बंद कर दो परंतु उससे दुश्मनी करना, उसे नीचा दिखाना, उसे पीड़ित करना तो अपने लिए शूली तैयार करना अथवा फांसी का रास्ता बनाना है। क्षमा करने से अपना ही मन हल्का होगा, दूसरे को भी निकट आने का साहस होगा और तीसरे के पास भी रिपोर्ट(शिकायत) नहीं जायेगी। क्षमा करना तो बड़प्पन है, वीरता है। किसी आत्मा के उद्धार की एक विधि है। सरकार ने भी कई डाकुओं को क्षमा देकर लूट-मार के धन्धे-डण्डे से छुड़ाया था। क्योंकि वे डाकू ही अब उन काले कारनामों को छोड़ना चाहते थे।

दया का भाव यह नहीं है कि कोई व्यक्ति बार-बार पाप, अपराध करता रहे और हम क्षमा करते रहें। परिणामस्वरूप वह अनेकों को कष्ट पहुंचाता रहेगा। ऐसे व्यक्ति पर तो रोक लगानी पड़ती है अथवा उसे एहसास कराने के लिए विधि-विधान के अनुसार दंडित भी करना पड़ता है। परंतु इन सबके पीछे भी भाव दया ही का रहना चाहिए। अर्थात् यह भाव होना चाहिए कि वह पाप कर्म न करे और उनका कल्याण हो।

जिसके हाथ में कुछ अधिकार है, जो ऊँची कुर्सी पर बैठा है या सत्ता पर डण्डा लिये हुए है, वह अभिमान के कारण आतंक मचाता है, धमकियां देता है या निर्दोष पर भी दोष लगाकर उसे दंडित करता है व कमज़ोर पर अत्याचार करता है, दबाव डालकर पैसा ऐंठता है, हकीम समझकर हुकूमत चलाता है या हांककर पशुओं की तरह चलाता है। उसे यह मालूम नहीं पड़ता कि दूसरों को सताकर, उनके आँसू के आहों को निकालकर अपने लिए आफत ला रहा है। उस बुद्धिभ्रष्ट व्यक्ति का विवेक नष्ट हो जाता है। वह पुलिस अधिकारी होकर सुरक्षा या राहत देने की बजाय निरपराध को डण्डा मारता है और फटकारता है या जेल में डालता है। लाइसेंस देखने के बहाने चालान करने की धमकी देकर रोब से पैसा मांगता है। यदि वह प्रशासनाधिकारी है तो तरक्की रोक लेता है। गलत रिपोर्ट देकर हानि पहुंचाता है और काम पर काम लेते जाने के बाद भी सुस्त बताता है। यदि वह राजनीतिक नेता है तो वो अपनी शक्ति का दुरुपयोग करते हुए या तो झांसा देता है या अपना अनुचर बनाता है तथा वोट और नोट मांगता है। इस प्रकार हरेक शक्तिशाली तथा अधिकार युक्त व्यक्ति दबदबा दिखाकर परेशान करता है। यहाँ तक कि आश्रम का अधिकारी अथवा स्वामी भी अपनी सत्ता, सिद्धि, स्थानों या साधनों के बलबूते पर अनेकानेकों के दिल दुःखाता है और अदला-बदली करके खलबली मचाकर या चालाकी चलकर बहुत जनों को दुःखी या परेशान करता है और डण्डा मारकर पशुओं की तरह चलाता अथवा काम लेता है। यही तो धर्म-ग्लानि है। यदि धर्म के ठेकेदार ही निर्दयी बन जायें और कमज़ोरों तथा अधिनस्थ लोगों की रूह को राहत देने की बजाय उन्हें आहत करें तो गोया वे विपरीत-बुद्धि, ईश्वर-विमुख हैं। वह दूसरों को वंचित कर अपना भरण-पोषण करने वाले हैं। वे भगवान का नाम लेते परंतु भगवान से नहीं डरते। दूसरों के दिल से जो हाय-हाय निकलती है, उस हाय रूपी अंदर की अग्नि में भस्मीभूत होने का निमंत्रण स्वीकार करते हैं। अतः हे मनुष्य, तू कुछ तो डर, दया कर तो दया का पात्र बनेगा। नेकी कर दरिया में डाल। दया से ही धर्म के वृक्ष का मूल उगेगा। हे मानव, तू दुत्कार न दे, दया किया कर, प्यार तू दे दिया कर। क्षमाशील बन, भगवान को देख, मत सता, न दुःखा, स्वयं को देख। कुछ रहम कर..., कुछ रहम कर, वहम न कर, लोग आहें भरेंगे तू ऐसा अहम न कर। हे मनुष्य, अपना चार्ट रख, दयावान बन, दुआओं के पात्र बन न कि दुःख देकर बद्दुआयें ले। सिर्फ दया करने लग जा तो दया के सागर आपको सद्बुद्धि देकर पुण्य का कर्म ही करायेंगे। बीती सो बीती कर अब जाग जा। जीवन बहुत छोटा भी है और अमूल्य भी।

अलौकिक पालना का अनुभव

चाहे सतयुग में लक्ष्मी-नारायण का राज्य होगा लेकिन लक्ष्मी नारायण का बच्चा और संगमयुग पर हम भगवान के बच्चों ने जो अनुभव किया है, वो सारे कल्प में और कोई करा नहीं सकता है।

दादी हृदयमोहिनी,मुख्य प्रशासिका

लोग कहते हैं सबके अन्दर परमात्मा समाया हुआ है, लेकिन हम कहते हैं कि हम सबके दिल में बापदादा की याद समाई हुई है। हम उनके बच्चे हैं वो हमारा बाबा है। आप सभी ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी तो बन गये हैं ना! लेकिन आपने ब्रह्मा बाबा को देखा है? क्या जवाब देंगे? डबल फॉरेनर्स ने कहा कि हाँ आपसे भी ज़्यादा देखा है। हमने कहा आपने कैसे देखा है? तो बोले अनुभव की आंख से ब्रह्मा बाबा और शिवबाबा दोनों को देखा है। और यह सच है कि आंखों से देखी हुई चीज़ तो फिर भी थोड़ा कुछ ऊपर-नीचे अथवा मिसअंडरस्टैंडिंग हो सकती है। लेकिन अनुभव की हुई चीज़ को कोई कितना भी बदलने की कोशिश करे, हम बदल नहीं सकते। जैसे चीनी को आपने चखके देख लिया कि यह मीठी होती है। अगर आपको सारे विश्व की आत्मायें भी कहें कि नहीं, चीनी मीठी नहीं होती है, खट्टी या नमकीन होती है तो आप मानेंगे? नहीं ना! क्योंकि चीनी को सिर्फ देखा ही नहीं, बल्कि चखके उसके स्वीटनेस का अनुभव किया है। तो हम सभी ने जो अव्यक्त बाबा से जन्म लिया है, उन सबने भी अनुभव के आधार से तो बाबा को देखा, जाना है ना! इसीलिए हमारा दिल कहता है "मेरा-मेरा कहते ही हमारे इस नयेजन्म का सौदा भगवान से हो गया क्योंकि मेरा माना उसपर पूरा अधिकार होता है। तो सिर्फ कहने की रीति से नहीं, दिल से अगर कहते हैं मेरा बाबा तो हम अधिकारी बन ही गये। जो बाबा का वो मेरा और जो मेरा वो बाबा का। ऐसे नहीं बाबा का तो मेरा है लेकिन मेरा बाबा का नहीं, तो उसको बाबा बच्चा नहीं मानते हैं इसलिए जो मेरा सो बाबा का और बाबा का सो मेरा इसको कहा जाता है सच्चा-सच्चा ब्रह्माकुमार या ब्रह्माकुमारी। तो आप सबने ऐसा सौदा किया है ना भगवान से? दिल से कहा है ना, मेरा बाबा? इसलिए हम ऐसे नहीं कहेंगे कि हमारा ब्रह्माबाबा ऐसा था, नहीं कहेंगे। सचमुच अगर भगवान को बाबा कहा जाता है तो हमने प्रैक्टिकल जीवन में साकार रूप में ब्रह्मा बाबा को और ब्रह्मा बाबा द्वारा शिवबाबा को अनुभव किया है। हमारा दिल तो यही कहता है कि सारे कल्प में ऐसा बाबा मिल नहीं सकता। चाहे सतयुग में लक्ष्मी-नारायण का राज्य होगा लेकिन लक्ष्मी नारायण का बच्चा और संगमयुग पर हम भगवान के बच्चों ने जो अनुभव किया है, वो सारे कल्प में और कोई करा नहीं सकता।

संकल्पों पर आधारित हमारी खुशी

दादी प्रकाशमणि,पूर्व मुख्य प्रशासिका

जितना अभी तन से करो उतना तंदुरुस्त बनेंगे। फालतू सोचने से भी सिरदर्द होता है। सोचने से दर्द आ जाता है। हेल्दी बनना हो तो फालतू मत सोचो।

बाबा कहते बच्चे तुरंत दान महापुण्य के महत्व को समझ खुश रहो। तुरंत दान अर्थात् जो संकल्प आये कर लो, कल किसने देखा है। दान यथाशक्ति दिया जाता, पुण्य जितना चाहे करो। समय पर हमदर्दी से किसको मदद करो तो उसके दिल से दुआ निकलेगी। दान किया तो कुछ न कुछ जमा किया, बीज बोया। बाबा के यज्ञ में कभी यह शब्द नहीं आता कि डोनेशन लेते हैं। यज्ञ सेवा अर्थ बीज बो रहे हैं, यह कर्म की खेती है, सत्य धर्म की स्थापना का कार्य है। इसका फल न केवल मुझे मिलेगा बल्कि अन्य भी खायेंगे। जितना जो तन-मन-धन सफल करता है उतना खुशी में रहता है। मात-पिता भी हमें खुशी में नाचता हुआ देख खुश होते हैं। दुनिया की आत्मायें जो हमें नहीं जानती वह भी सोचती हैं- यह इतना खुश कैसे रहते हैं। बाबा को दिल से याद करने वाले को खुशी होती है क्योंकि वह विजयी बनता जाता है। उसका मन, कर्मेन्द्रियों पर कंट्रोल आ जाता है। जो इच्छा, ममता के वश में हैं, कर्मेन्द्रियों के गुलाम हैं, उसे खुशी नहीं हो सकती। जिसे कोई इच्छा न हो वह बहुत खुश है, जो संगठन में रहते गुणग्राही है वह खुश है। ज़रा भी निंदा करने वाला कभी खुश नहीं रह सकता। तो पहले हैप्पीनेस चाहिए फिर हेल्दी-वेल्दी रहेंगे।

जिन बातों से खुशी गुम होती है, वहाँ से रास्ता बंद कर दो। जहाँ से खुशी आती है वह रास्ता खुला रखो। मेरी खुशी गुम क्यों होती है! चेक करना है- कोई गफलत है? बाबा ने जो इतना खज़ाना दिया है, वह कोई छीन न सके, इतना खबरदार, केयरफुल रहना है। संगमयुग की यह खुशी सतयुगी राज्य का अधिकारी बना रही है।

सेवा ब्राह्मण जीवन की शोभा है। ब्राह्मण सेवा न करें तो देवता बन न सकें। सेवा तन-मन-धन को पावन बनाती है। जो तन-मन-धन से सेवा में लगता है वह सहज पावन बन जाता है। जितना अभी तन से करो उतना तंदुरुस्त बनेंगे। फालतू सोचने से भी सिरदर्द होता है। सोचने से दर्द आ जाता है। हेल्दी बनना हो तो फालतू मत सोचो। वेल्दी बनना हो तो बाबा गरीब-निवाज़ है, पैसा नहीं है, दिल तो बड़ी है ना! अंदर से देने की दिल हो तो खुशी बढ़ेगी। खुशी सच्चाई से आती है। सेवा करो, सदा मीठा बोलो, औरों की दुआयें लेते चलो तो सदा खुश रहेंगे। रफ़ बोलने से खुशी गायब हो जाती है। जो खुशी से पुरुषार्थ करते हैं वह उड़ते रहते हैं, भारी नहीं होते। जो समझते हैं कि मैं बाबा की गोद में बैठा हूँ, बाबा के कंधों पर बैठा हूँ, बाबा के सिर पर बैठा हूँ... उन्हें बहुत खुशी रहती है। बाबा हमें अपना सिरमौर बनाता, डबल क्राउन देता है। जितना ऊंचा सोचो उतना ऊंचा बनेंगे। जितना फालतू सोचो उतना धारणा कम होती है। किसी को न देख बाबा ने जो खुशी का खज़ाना दिया है, जितना लूट सको लूटो और हेल्दी-वेल्दी बन जाओ।

उमंग-उत्साह के बिना जीवन नीरस

दादी जानकी,पूर्व मुख्य प्रशासिका

पहले सिर्फ ओम कहते थे,अभी ओम के साथ शान्ति बोलते हैं, तो शान्ति पहले फिर ओम निकलता है। साइंस के साधन सारे विश्व को अच्छी सेवा दे रहे हैं, यह तो काम हो रहा है। साइंस है प्रकृति का साधन, लेकिन वो भी तमोप्रधान बन चुकी है, हम अभी उसको साइलेन्स से सतोप्रधान बना रहे हैं। यह साइंस के साधन सौ साल पहले नहीं थे, अभी तो जलवा देख रहे हैं, प्लेन में उड़ रहे हैं। पहले प्लेन नहीं था। पुराने ज़माने में हम भी कराची से स्टीम्बर में आये, कोई ख्याल भी नहीं था कि प्लेन में भी कोई जा सकते हैं। अभी बाबा हमारी बुद्धि को प्लेन बना रहा है। सहयोग देना, सहयोग लेना सहजयोग है। ऐसे नहीं लगे हम सहयोग दे रहे हैं, सहयोगी रहना अच्छा लगता है। और कहीं से सहयोग मिलता है तो दिल से थैंक्स निकलता है।

अन्दर में शान्ति है तो खुशी में चमक रहे हैं, ज़रा भी अशान्ति नहीं है। तो ऐसी शान्ति की शक्ति खुशमिजाज बना देती है। खुशी खुराक भी है, तो खज़ाना भी है। खुद को खुश रखने के लिए,औरों को खुश करने के लिए मनुष्यों को कितनी मेहनत करनी पड़ती है। सारी जीवन में मैं खुश रहूँ और भी खुश रहें इसमें बहुत मेहनत है। खुश रहना माना अन्तर्मुखी रहना। जो कभी खुश नहीं होते उसका कारण क्या है? बाह्यमुखता एकदम अच्छी नहीं लगती। बाह्यमुखता से कर्मेन्द्रियाँ चंचल हो जाती हैं। कर्मेन्द्रियाँ ऑर्डर में हैं तो शीतल हैं, शान्त हैं। तो अन्तर्मुखता से मन-बुद्धि को जीतने में खुशी है, विकर्माजीत बनने में खुशी है। कई कहते कभी-कभी, थोड़ा-थोड़ा बोला तो क्या हुआ? यह जो हमारी आदत है ज़्यादा सोचने की, बोलने की... जैसे यह करना है, यह करना है... इससे टेन्शन हो जाता है। तो फिर कोई भी पुरुषार्थ करने में मेहनत अनुभव होती है इसलिए सच्चाई से अन्दर चित्त को साफ रखने से खुशी होती है। तो कोई डिफेक्ट रह न जाये, उसके लिए गहराई से अपनी चेकिंग करके समय रहते चेंज कर लें, नहीं तो वो बाबा के दिल में नहीं बैठ सकेंगे। बाबा ने बहुत बड़ी दिल रखी है, कुछ भी चाहिए तो बाबा के दिल में चले जाओ। दिलाराम बाबा की दिल कैसी है? बाबा के सामने तो लाखों, करोड़ों बातें हैं दुनिया भर की, फिर भी देखो समा लेता है। बाबा जैसी दिल बनानी हो तो समाने की, समेटने की शक्ति से कोई भी बात की डिटेल में जाओ ही नहीं। समेटने और समाने की शक्ति से सदा सन्तुष्ट रहने का वरदान बाबा से ले लो। जब से बाबा की बनी हूँ, मुझे तो यह वरदान प्राप्त है। बाबा ने कहा सदा शब्द सदा याद रखो, यह बात साकार में भी कहता था। बड़े जो कहते हैं वो करो, तो हाथ से ऐसे आशीर्वाद मिलती है परन्तु जो अच्छा बन जाते हैं उनको दिल से दुआ मिलती है, मांगने से नहीं। वह दुआओं की ताकत चला रही है। ले लो दुआयें माँ-बाप की, तो सारे पापों की गठरी उतरे, फिर बाबा के प्यार की शक्ति से श्रेष्ठ कर्म करने का उमंग-उत्साह कभी कम नहीं होता है। बाबा की दुआयें भारीपन को खत्म कर देती है। बाबा मेरा कम्पैनियन है, यह फीलिंग सदा होती रहेगी तो खालीपन व अकेलापन फील नहीं करेंगे। कोई भी ऐसी घड़ी न आ जाये जो लगे कि मेरा कोई साथ नहीं दे रहा है, मेरे पास यह नहीं है, उनके पास है, यह थोड़ा भी संकल्प आया तो निश्चयबुद्धि से जो विजयंती बनने की लिंक चल रही थी वो टूट जाती है। प्लीज़, कभी भी कोई भी कारण से उमंग-उत्साह कम न हो।

OM-21 - 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 27/01/2021 4:29 PM Page 3

जीतना है... तो मुस्कान हो राम जैसी

ब्र.कु. मोनिका,शांतिवन

हँसी... एक बहुत ही छोटा... साधारण-सा शब्द, एक बहुत ही छोटी... साधारण-सी क्रिया। इतनी साधारण कि किसी को भी इसे सीखने या सिखाने की ज़रूरत नहीं। एक जन्मजात शिशु भी बड़ी ही सहजता और कुशलता से हँसता व मुस्कुराता है। और जब ये क्रिया शिशु के लिए इतनी सहज है तो फिर बड़ों की बात ही क्या! हम सभी भी

दिन भर में न जाने कितनी ही बार हँसते व मुस्कुराते होंगे। और इसमें कुछ सोचने, समझने या समय लगाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती। किसी ने कुछ कहा... कहीं से कुछ सुना... मन में कुछ बात आई... और फिर बस... दे दी प्रतिक्रिया अपनी हँसी से! लेकिन आप देखेंगे... हर बार की हँसी कुछ अलग ही रंग दिखाती। अलग-अलग भाव-भंगिमाओं के साथ अपनी भावना प्रकट करती। भले हँसी कुछ कहती नहीं... पर सबकुछ कह जाती। हँसी... दिल के हर राज़ से पर्दा उठा जाती।

ये हँसी केवल एक क्रिया नहीं, एक कमाल की कला है। इसके कई रूप हैं। इसके अलग-अलग रूप अलग-अलग रंग बिखेरते हैं। देखिए... यदि सही बात पर हँस रहे हैं तो सभी का मनोरंजन हो जाएगा, सभी को आनंद आएगा। लेकिन यदि किसी का मज़ाक उड़ाने के लिए ठहाके लगाकर हँस रहे हैं तो वो हँसी सामने वाले को चोट पहुंचा सकती है, उसे दुःखी भी कर सकती है। यदि किसी पर व्यंग्य कसने के लिए हम हँस रहे हैं तो हमारे होंठ और हमारी भौहें चढ़ी हुई होंगी और सामने वाले को हमसे उसके प्रति घृणा और कटुता का आभास हो जायेगा। आप देखेंगे... कोई हँसी मनोरंजन कर रही है, कोई हँसी दुःख पहुंचा रही है और कोई कटुता का आभास करा रही है। ऐसी एक दो नहीं... कई प्रकार की हँसी हमें जीवन में देखने को मिलती हैं और हर हँसी के भिन्न-भिन्न परिणाम सामने आते हैं। लेकिन एक हँसी ऐसी है जो हर परिस्थिति में, हर हालात में हमें विजयी बनाती है। वो है आत्मविश्वास की हँसी। जिसका एक सटीक उदाहरण हमें श्रीराम के रूप में देखने को मिलता है। राम धीर-गंभीर, मर्यादा पुरुषोत्तम थे, और साथ ही हँसी के मामले में बड़े परिपक्व थे। उनका मौन और हँसी दोनों ही निराले थे। शास्त्रों में ये वर्णन आता है कि रावण से युद्ध करते हुए श्रीराम कई बार हँसे और हर बार उस हँसी के पीछे एक गहराई थी। रावण ने जब अपनी माया से एक साथ बहुत से रावण पैदा किए तो देवता, वानर सब डर गए। रामजी को लगा कि अब तो इसे रोकना पड़ेगा। रावण की माया को काटने के लिए रामजी ने धनुष-बाण साधा और मुस्कुराए।

इस दृश्य पर तुलसीदास जी ने लिखा, 'सुर बानर देखे बिकल हंस्यो कोसलाधीस। सजि सारंग एक सर हते सकल दससीस।। राम मुस्कुराए और एक ही बाण में रावण की सारी माया हर ली। तो क्या राम जी रावण को पहले ही नहीं रोक सकते थे! पहले ही उसे खत्म नहीं कर सकते थे! अवश्य कर सकते थे। रावण को खत्म करना श्रीराम के लिए पल भर का काम था, लेकिन वो रावण को अपने काल से बचने का अवसर और सभी को ये सीख दे रहे थे कि किसी न किसी रावण के रूप में ज़िन्दगी में परिस्थितियां, चुनौतियां आती ही रहेंगी। एक से निपटोगे, दूसरी पैदा हो जाएगी। अपनी शिक्षा, योग्यता और परिश्रम से इनके समाधान के लिए तैयार रहें, तनावग्रस्त नहीं होना है, मुस्कुराते हुए उनसे निपटना है।

राम की हँसी आत्मविश्वास की थी। वे जानते थे कि असत्य चाहे कितना ही अंधकार फैला दे, अपनी माया की छाया में कितना ही भ्रमित कर दे, लेकिन सत्य एक ऐसा सूर्य है जिसे झूठ के काले घने बादल भी छिपा नहीं सकते और अंततः विजय सत्य की ही होती है। और इसीलिए वे गंभीर और आत्मविश्वासी मुस्कान लिये युद्ध लड़ रहे थे। ये जीवन भी एक युद्ध का मैदान है। अब ये हमपर निर्भर करता है कि हम रावण की तरह लड़ें या राम की तरह। राम की तरह हँसते हुए लड़ेंगे तो जीत सुनिश्चित है, रावण की तरह अभिमान के ठहाके मारेंगे तो हारने से कोई बचा नहीं सकता।

अहमदनगर-महा.। ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके एवं ब्र.कु. डॉ. सुवर्णा द्वारा भारत के प्राचीन राजयोग के प्रचार-प्रसार के लिए किए गए कार्यों एवं विश्व कीर्तिमानों के लिए विख्यात फोर्ब्स मैगज़ीन ने अपने 'मॉडर्न इंडियाज़ गेम चेंजर्स' विशेषांक में उनकी सराहना एवं प्रशंसा की। फोर्ब्स मैगज़ीन की कॉपी रालेगण सिद्धि में वरिष्ठ समाजसेवी अन्ना हज़ारे को भेंट करते हुए ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके।

केशोद-गुज.। सेवाकेन्द्र पर सांसद रमेश धडुक, विधायक देवाभाई मालम तथा अन्य अग्रणी लोगों के साथ आध्यात्मिक चर्चा करने के पश्चात् उनके साथ हैं ब्र.कु. रूपा।

गया-ए.पी. कॉलोनी(बिहार)। नये वर्ष के आगमन पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुनीता, मखदुमपुर क्षेत्र के विधायक एवं समाजसेवी सतीश कुमार दास तथा अन्य।

बाजीपुरा-बारडोली(गुज.)। राष्ट्रीय किसान दिवस के अवसर पर किसानों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में मंच पर उपस्थित हैं जिगर भाई,ऑर्गेनिक फार्मर, सुनीता चौधरी,एग्रीकल्चर टीचर, ब्र.कु. विनु भाई पारडी,वलसाड, समीर भक्त,चेयरमैन,मढ़ी शुगर फैक्ट्री, शांतिलाल पटेल,चेयरमैन,ए.पी.एम.सी.,वालोड, अल्पेश भाई, डॉ. रक्षा भट्ट तथा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रीति बहन।

फ्लोरिडा-यू.एस.ए.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित ऑनलाइन रिट्रीट प्रोग्राम में जर्मनी से ब्र.कु. डेनिस तथा ब्र.कु. मोहिनी दीदी ने विभिन्न विषयों पर सभी का मार्गदर्शन किया। मरियान,मियामी तथा क्रेग,डेलरे ने इस ऑनलाइन सत्र की सुविधा उपलब्ध कराई।

रतलाम-नज़रबाग कॉलोनी(म.प्र.)। नव वर्ष के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीमा तथा अन्य भाई-बहनें।

नागपुर-महा.। राज्य सरकार द्वारा आयोजित '15वें राज्य स्तरीय ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार 2020' कार्यक्रम में विश्व शांति सरोवर,वर्ल्ड रिन्युअल स्पीरिचुअल ट्रस्ट,नागपुर को मिला आवासीय भवन क्षेत्र के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार। जिसे स्थानीय संचालिका ब्र.कु. रजनी ने प्राप्त किया। ब्रह्माकुमारीज़ एजुकेशनल सोसायटी,पुणे,जगदम्बा भवन को एन.जी.ओ. सेक्टर के अंतर्गत मिला द्वितीय पुरस्कार, जिसे ब्र.कु. सुनंदा ने प्राप्त किया तथा बी.के.ई.एस. प्रोजेक्ट एनर्जी ऑडिटर ब्र.कु. केदार व्यक्तिगत क्षेत्र में चुने गये।

भद्रक-ओडिशा। कलेक्टर ज्ञान दास तथा एडिशनल डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट श्याम भक्त मिश्रा का ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर स्वागत करते हुए ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. अरुण कुमार पण्डा,सीनियर जर्नलिस्ट,कटक तथा अन्य।

ब्यावरा-अपना नगर(म.प्र.)। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक एक पैर से साइकिल चलाकर यात्रा पूरी कर विजेता बनीं इंजीनियर तान्या डागा के ब्यावरा लौटने पर स्थानीय सेवाकेन्द्र पर ब्र.कु. रुक्मिणी द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया। इस अवसर पर डॉ. वैष्णवी कसेरा, शिक्षिका अनीता सोनी, सुमन कसेरा, वंशिका, ब्र.कु. रचनी बहन सहित अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।

हाथरस-उ.प्र.। इगलास में आयोजित 'विकास खण्ड स्तरीय कृषि निवेश गोष्ठी प्रदर्शनी' में ब्रह्माकुमारीज़ आनंदपुरी कॉलोनी सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. शांता बहन ने सभी को ब्रह्माकुमारीज़ के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा चलाये जा रहे शाश्वत यौगिक खेती के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर ब्र.कु. हेमलता, इगलास विधायक राजकुमार सहयोगी, जिला कृषि अधिकारी विनोद कुमार, मुख्य विकास अधिकारी अनुज झा, जिलाधिकारी इन्द्रभूषण जी सहित बड़ी संख्या में किसान भाई मौजूद रहे।

जम्मू। प्रो. कुलभूषण म्होत्रा,इंचार्ज,लाइब्रेरी एंड डॉक्युमेंटेशन डिपार्टमेंट,बी.जे.पी.,जम्मू एंड कश्मीर को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. सुदर्शन दीदी। साथ हैं ब्र.कु. रविन्दर, ब्र.कु. रमा तथा रवि बख्शी,एक्ज़ीक्युटिव मेम्बर,बी.जे.पी.,जम्मू एंड कश्मीर।

रशिया-ट्यूमेन। सामाजिक रूप से उन्मुख गैर सरकारी संगठनों के गठबंधन की पाँचवी वर्षगांठ पर सेम्य रिजनल सेंटर में ट्रैजेक्टरी ऑफ होप चैरिटेबल फाउण्डेशन के सहयोग से आयोजित कार्यक्रम में सभी गैर सरकारी संगठनों को सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया। ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से ब्र.कु. लरिसा जुरवस्काया ने पुरस्कार प्राप्त किया।

OM-21 - 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 27/01/2021 4:29 PM Page 4

इंतज़ार का नहीं यह वर्ष है इंतजाम का

ब्र.कु. शिवानी,
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

हम बड़े दिनों से इंतज़ार कर रहे थे कि 2020 कब खत्म होगा। क्योंकि हमने कहा 2020 साल ही अच्छा नहीं था। हम इंतज़ार कर रहे थे 2021 आएगा तो जीवन बदल जाएगा, परिस्थितियां बदल जाएंगी, मन की स्थिति बदल जाएगी। हमने सोचा हमारी मन की स्थिति, हमारी खुशी, हमारे मन की शक्ति और शांति, परिस्थितियों पर, लोगों पर निर्भर है। जैसे एक बच्चा पूछता है आपको क्या लगता है मेरा परीक्षा में क्या होगा? तो हम उसे कहते हैं, जैसी तैयारी होगी, वैसा ही तो होगा। हम यह नहीं कहते कि अगर एग्ज़ाम आसान होगा तो अच्छा होगा और मुश्किल होगा तो कैसे अच्छा होगा। हम परीक्षा पर ध्यान केंद्रित नहीं करते, हम तैयारी पर फोकस करते हैं। 2020 में हमारी परीक्षा मुश्किल हो गई थी, लेकिन हमारी तैयारी कैसी थी? 2021 शुरु हो गया, पर हमें क्या पता है कि इस साल कौन-सी परीक्षा आएगी। चाहे वो विश्व में हो, देश, शहर, मोहल्ले, परिवार या व्यक्तिगत जीवन में हो, मेरे शरीर पर हो, क्या मुझे पता है कि 2021 मेरे लिए कौन-सी बातें लेकर आ रहा है। इस साल की परीक्षा कैसी होगी।

अब फोकस करते हैं अपनी तैयारी पर, परीक्षा पर नहीं। ये नहीं सोचना 2021 कैसा होगा। महत्वपूर्ण यह है कि हमारे मन में कैसा होगा। क्योंकि जैसा मन में होगा वही तो जीवन की गुणवत्ता होती है। जीवन वो नहीं है जो हमारे साथ होता है। जीवन यह है कि जो होता है उसके प्रति हमारा नज़रिया, हमारे शब्द और व्यवहार कैसे हैं। इसलिए आज से हम इंतज़ार नहीं करेंगे। इंतज़ार से जीवन नहीं बदलता, इंतज़ाम से बदलता है। हम सब सोच रहे होंगे कि नए साल में कौन-सी नई आदतें, नए संस्कार जीवन में अपनाएंगे। हर साल प्लान बनाते हैं और बहुत प्यार लागू कर अपने जीवन में परिवर्तन लाते हैं। वो प्लान हम किसी भी दिन बना सकते हैं। छोटी-छोटी आदतें, बातें, छोटे-छोटे व्यवहार, सोचने का तरीका, ये मेरी आत्मिक शक्ति को घटा सकते हैं। जितनी मेरी आत्मिक शक्ति होगी, वो मेरी जीवन की क्वालिटी होगी। आत्मिक शक्ति यानी मेरी तैयारी। जीवन की हर परिस्थिति का सामना करने के लिए मेरी तैयारी कैसी है। हम उन छोटी-छोटी बातों को देखते हैं, जिनसे हम आत्मा की शक्ति बढ़ा सकते हैं। जैसे - जब हमें अपने शरीर का ध्यान रखना है तो हम छोटी-छोटी बातें करते हैं। जल्दी उठते हैं, रात को जल्दी सोते हैं, अपनी डाइट में बदलाव लाते हैं। एक चीज़ याद रखें कि एक महान परिवर्तन लाने के लिए कुछ बहुत बड़ा नहीं करना पड़ता। लेकिन छोटे-छोटे परिवर्तन रोज़ करने हैं। परमात्मा कहते हैं हर क्षण आपका नया हो। परमात्मा सिखाते हैं कि नए साल का इंतज़ार नहीं करना, नए दिन का भी इंतज़ार नहीं करना, आपका हर क्षण नया होना चाहिए। तब हमारे मन की स्थिति आगे बढ़ती जाएगी। उसी को अगर गणित की भाषा में समझें तो जो आज हम हैं, अगर एक साल तक ऐसे ही रहते हैं, तो हमारे अन्दर कोई बदलाव नहीं आता। यानी हम 1 पर ही रहते हैं। और 1X365 = 1, यानी कुछ नहीं बदलता। लेकिन अगर हम अपने अंदर एक फीसदी भी परिवर्तन लाते हैं और उस एक फीसदी को रोज़ लाते हैं, तो एक साल में हमारे अंदर 367 प्रतिशत बदलाव आ जाएगा।

एक महान परिवर्तन के लिए कुछ बड़ा नहीं करना पड़ता। छोटे-छोटे परिवर्तन रोज़ करने होते हैं।
ये नहीं सोचना कि 2021 कैसा होगा। ज़रूरी यह है कि हमारे मन में कैसा होगा। जैसा मन में होगा वही जीवन की गुणवत्ता होती है। जीवन वो नहीं है, जो हमारे साथ होता है। बल्कि जो होता है उसके प्रति हमारा नज़रिया कैसा है।
परीक्षा कैसी होगी हमें ये नहीं सोचना चाहिए। हमारा ध्यान सिर्फ और सिर्फ हमारी तैयारी पर होना चाहिए।

अब हमें लगता है कि अगर कुछ नहीं भी किया तो हम जैसे आज वन हैं 365 दिन के बाद हम वन ही होंगे। लेकिन ऐसा होगा नहीं। क्योंकि अगर हम वन प्रतिशत ऊपर नहीं उठते हैं, तो संभव है कि हम थोड़ा-सा नीचे चले जाएंगे। क्योंकि वातावरण का प्रभाव, लोगों की स्थिति का प्रभाव, परिस्थिति का प्रभाव पड़ता है। हम अकेले तो नहीं हैं ना! परिस्थितियां कैसी होंगी नहीं पता, लोग कैसे होंगे नहीं पता, उनका व्यवहार कैसा होगा नहीं पता, तो ये बदलाव का असर कम होने की बहुत आशंका है। हमारी सुरक्षा इसी में है कि हम अपना एक फीसदी ऊपर बढ़ाते रहें। रोज़ छोटे-छोटे बदलाव, जो हम अपने अंदर लेकर आएंगे, तो सोचो 365 दिन में कितना बदलाव होगा। अपनी मन की स्थिति में रोज़ छोटा परिवर्तन करें। जब हम ये करेंगे तो हमें ये नहीं सोचना पड़ेगा कि 2021 कैसा होगा, 2022 कैसा होगा। हम इंतज़ार नहीं करेंगे। परीक्षा कैसी होगी, हम ये नहीं सोचेंगे। हमारा ध्यान सिर्फ और सिर्फ अपनी तैयारी पर होगा।

कथा सरिता

क्या भगवान भोग खाता है?

"क्या भगवान हमारे द्वारा चढ़ाया गया भोग खाते हैं? यदि खाते हैं, तो वह वस्तु समाप्त क्यों नहीं हो जाती और यदि नहीं खाते हैं, तो भोग लगाने का क्या लाभ?" - एक लड़के ने पाठ के बीच में अपने गुरु से प्रश्न किया। गुरु ने तत्काल कोई उत्तर नहीं दिया। वे पूर्ववत् पाठ पढ़ाते रहे। उस दिन उन्होंने पाठ के अंत में एक **श्लोक पढ़ाया -**

पूर्णमदः पूर्णमिंद पूर्णात्
पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय
पूर्णमेवावशिष्यते।।

पाठ पूरा होने के बाद गुरु ने सभी शिष्यों से कहा कि वे पुस्तक देखकर श्लोक कंठस्थ कर लें।

एक घंटे बाद गुरु ने प्रश्न करने वाले शिष्य से पूछा कि उसे श्लोक कंठस्थ हुआ कि नहीं। उस शिष्य ने पूरा श्लोक शुद्ध-शुद्ध गुरु को सुना दिया। फिर भी गुरु ने सिर 'नहीं' में हिलाया, तो शिष्य ने कहा कि - "चाहे तो पुस्तक देख लें; श्लोक बिल्कुल शुद्ध है।" गुरु ने पुस्तक दिखाते हुए कहा - "श्लोक तो पुस्तक में ही है, तो तुम्हें कैसे याद हो गया?" शिष्य कुछ नहीं कह पाया।

गुरु ने कहा -"पुस्तक में जो श्लोक है, वह स्थूल रूप में है। तुमने जब श्लोक पढ़ा, तो वह सूक्ष्म रूप में तुम्हारे अन्दर प्रवेश कर गया। उसी सूक्ष्म रूप में वह तुम्हारे मन में रहता है। इतना ही नहीं, जब तुमने इसको पढ़कर कंठस्थ कर लिया, तब भी पुस्तक के स्थूल रूप के श्लोक में कोई कमी नहीं आई। इसी प्रकार पूरे विश्व में व्याप्त परमात्मा हमारे द्वारा चढ़ाए गए निवेदन को सूक्ष्म रूप में ग्रहण करते हैं और इससे स्थूल रूप के वस्तु में कोई कमी नहीं होती। उसी को हम प्रसाद के रूप में स्वीकार करते हैं।

अम्बिकापुर-छ.ग.। नये वर्ष के आगमन पर आयोजित कार्यक्रम में केक काटते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या बहन तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।

इंदौर-गंगोत्री विहार। राष्ट्रीय युवा दिवस पर 'यूथ फॉर ग्लोबल पीस' प्रोजेक्ट के उद्घाटन कार्यक्रम में मंचासीन ब्रह्माकुमारीज़ युवा प्रभाग की ज़ोनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. छाया, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीमा तथा अतिथिगण।

फिजी-सुवा। ब्रह्माकुमारीज़ की स्थानीय संचालिका ब्र.कु. शांता एवं असिस्टेंट मिनिस्टर वीणा भटनागर द्वारा संयुक्त रूप से आंधी से प्रभावित 120 से अधिक लोगों को राशन एवं आवश्यक सामग्री प्रदान की गई तथा आध्यात्मिक ज्ञान एवं योगानुभूति द्वारा उनके मनोबल को मज़बूत बनाने का प्रयास किया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. नंदिता दास तथा चरण सिंह की भी सहयोगिता रही।

अलिराजपुर-म.प्र.। कोरोना वायरस वैक्सीन लगाने की प्रक्रिया को लेकर आयोजित ऑनलाइन मीटिंग के तहत उपस्थित हैं मुख्यमंत्री वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग कलेक्टर सुरभि गुप्ता, ब्र.कु. माधुरी तथा अन्य अधिकारीगण।

मुन्द्रा-कच्छ(गुज.)। महावीर पशु रक्षा केन्द्र,एंकरवाला अहिंसाधाम द्वारा आयोजित 'जीव दया एवं पर्यावरण रक्षा' विषयक कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारी सुशीला दीदी को 'अहिंसा अवॉर्ड' से सम्मानित करते हुए केन्द्र की प्रतिनिधि महिलाएं। साथ हैं मैनेजिंग ट्रस्टी महेन्द्र भाई संगोई तथा अन्य।

जालंधर-ग्रीन पार्क(पंजाब)। राष्ट्रीय युवा दिवस पर 'यूथ फॉर ग्लोबल पीस' विषय के अंतर्गत आयोजित लॉन्चिंग कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. रेखा तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों सहित युवा वर्ग।

OM-21 - 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 27/01/2021 4:29 PM Page 5

»| वे हैं सच्चे आशिक....

- ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

गतांक से आगे...

जो सच्चे दिल वाले हैं उनको भगवान खूब प्यार करते हैं। इसीलिए बाबा कहते हैं ना कि एक दिल वाले और एक दिमाग वाले। परमात्मा को तो दिल में समाते हैं। जिसने परमात्मा को अपने दिल में समाया वो प्रभु को भी अति प्रिय होता है। तो इसीलिए कहा कि एक तो सच्चाई वाला और एक दिल वाला, वो परमात्मा के प्यार को सहजता से अपने जीवन के अन्दर महसूस कर सकता है। और परमात्मा ने जो हमें इतने गुह्य खज़ाने दिए हैं उन खज़ानों से भी अपनी झोली निरन्तर भरते रहते हैं। बाबा कहते हैं ना कि जिनका मुरली से प्यार है उनका मुरलीधर से भी प्यार है। जिसको अगर मुरली से प्यार न हो तो मुरलीधर से कैसे होगा! इसीलिए एक मीटर बाबा ने दे दिया कि अगर खुद को भी देखना है कि हमें ईश्वर से कितना प्यार है तो उसकी पढ़ाई, उसकी मुरली को हम अपने अन्दर कितना समाते हैं, समाने वाले ईश्वर को भी अति प्रिय हैं। हमारी दादीयां भगवान को इतनी प्रिय थीं क्योंकि जब भी देखो उनके हाथ में मुरली ज़रूर होती थी। दादी जानकी तो कहती थीं कि मैं एक साल पीछे आई तो मुझे तो लगा कि मैंने तो बहुत कुछ मिस कर दिया। तो एक ही मुरली को कितनी बार पढ़ती थीं। एक ही मुरली को कितनी बार अध्ययन करती थी। और उसी का प्रत्यक्ष प्रमाण कि कैसे दादी ने उस ज्ञान को घोट-घोट कर उसको चबा-चबा कर महीन किया, उतना ही अनेकों को देना शुरू किया। और इसीलिए दादी जानकी जब भी क्लास कराती थीं तो उनकी क्लास में से कोई न कोई ऐसी प्वाइंट मिलती ही थी जो विशेष होती थी। उसका कारण है कि उस मुरली को घोट-घोट कर अन्दर में समाया हुआ था। ये है परमात्मा के प्रति प्यार। उसी के आधार पर हम भी अपने को देखें कि क्या हम भी ऐसे परमात्म प्रेम में समाने वाले परवाने बने हैं? इतना हमारा प्यार है बाबा के साथ, बाबा की मुरली के साथ? वो मुरली हमारे अन्दर ऐसे समा जाये, ऐसे छप जाये, उस मुरली को हम अपने अन्दर चबा-चबा कर अपने अन्दर शक्ति भरते जायें। और उसी का यादगार शिवशक्तियों को दिखाया। एक तरफ स्नेह भी है आँखों में और दूसरी तरफ शक्ति रूप भी है। तो इसीलिए स्नेह और शक्ति का जहाँ बैलेन्स है वो ईश्वर का प्यार है। स्नेह के साथ चलें भी लेकिन लव एंड लो, जो ईश्वरीय मर्यादायें हैं, ईश्वरीय धारणायें हैं उसके आधार पर भी सम्पूर्ण अपने आपको चलाना है। तो लव एंड लो का बैलेन्स जिसके जीवन में है उसी का यादगार है कि आज भी वो देवियां कैसे ईश्वरीय स्नेह की चुम्बक बन करके हरेक भक्तों को अपनी ओर आकर्षित कर रही हैं क्योंकि वो खुद आकर्षित हो करके उसमें समा गईं। साथ साथ बाबा ने ये भी बताया कि बाबा का प्यारा वही बन सकता है जो जितना न्यारा रहता है। जितना देह और देह की दुनिया से, देह के सम्बन्धों से न्यारा है उतना ही प्रभु का प्यारा है या प्रभु प्यार को आकर्षित कर सकता है। अगर न्यारा नहीं तो प्यारा भी नहीं। ये स्पष्ट एक पहचान है। बाबा का प्यार इतना शुद्ध-विशुद्ध है कि जिसमें कोई अपेक्षा नहीं है, लेकिन चाहना ज़रूर है कि मेरे बच्चे मेरे समान बनें। दुनिया में मात-पिता की बच्चों के प्रति अपेक्षायें होती हैं इसलिए दुःख होता है। क्योंकि वो अपेक्षायें पूरी नहीं कर पाते तो दुःख महसूस करते हैं। तो प्रभु प्यार कितना विशुद्ध, कितना निर्मल, कितना मधुर है जो भक्ति मार्ग में गायन किया कि तेरी एक बूंद के प्यासे हम।

यह जीवन है

हमारी पहचान हमारे बार-बार किए गए कर्मों से ही होती है। श्रेष्ठता कोई कर्म नहीं है बल्कि हमारी आदतें हैं। तो आइए हम सभी श्रेष्ठता को अपनी आदत बना लें, और एक बात याद रखें - नेकी कर डाल दें दरिया में....

वरना नेकियों के बोझ से तूफान में फंस जाओगे, क्योंकि नाव वही तेज चलती है, जिसमें बोझ कम हो। कपड़े से छाना हुआ पानी, स्वास्थ्य ठीक रखता है, और विवेक से छानी हुई वाणी, संबंध को ठीक रखती है।

भले ही, 'शब्द' को कोई स्पर्श नहीं कर सकता। पर 'शब्द' सभी को स्पर्श कर जाते हैं। इसलिए हमेशा सोच समझ कर बोलो, कम बोलो, धीरे बोलो, मीठा बोलो।

मीठे फायदे से भरपूर कड़वा करेला

हरी सब्जियों के बीच आकर्षित करने वाला करेला, स्वाद में भले ही कड़वा लगता हो, लेकिन इससे होने वाले फायदे जरूर मीठे हैं। क्या आप जानते हैं, करेले से स्वास्थ्य को होने वाले इन लाभों के बारे में? अगर नहीं जानते, तो पढ़िए कड़वे करेले के यह फायदे -

स्वास्थ्य

- करेले में फास्फोरस पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। यह कफ, कब्ज और पाचन संबंधी समस्याओं को दूर करता है। इसके सेवन से भोजन का पाचन ठीक तरह से होता है, और भूख भी खुलकर लगती है।
- अस्थमा की शिकायत होने पर करेला बेहद फायदेमंद होता है। दमा रोग में करेले की बगैर मसाले की सब्जी खाने से लाभ मिलता है।
- पेट में गैस बनने और अपच होने पर करेले के रस का सेवन करना अच्छा होता है।
- करेले का जूस पीने से लीवर मजबूत होता है और लीवर की सभी समस्याएं खत्म हो जाती हैं। प्रतिदिन इसके सेवन से एक सप्ताह में परिणाम प्राप्त होने लगते हैं। इससे पीलिया में भी लाभ मिलता है।
- करेले की पत्तियों या फल को पानी में उबालकर इसका सेवन करने से, रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है, और किसी भी प्रकार का संक्रमण ठीक हो जाता है।
- उल्टी-दस्त या हैजा हो जाने पर करेले के रस में काला नमक मिलाकर पीने से तुरंत आराम मिलता है। जलोदर की समस्या होने पर भी दो चम्मच करेले का रस पानी में मिलाकर पीने से लाभ होता है।
- लकवा या पैरालिसिस में भी करेला बहुत कारगर उपाय है। कच्चा करेला खाने से भी रोगी के लिए लाभदायक होता है।
- मधुमेह में यह बेहद असरकारक माना जाता है। मधुमेह में एक चौथाई कप करेले का रस, उतने ही गाजर के रस के साथ पीने पर लाभ मिलता है।
- खूनी बवासीर में करेला अत्यंत लाभदायक है। एक चम्मच करेले के रस में आधा चम्मच शक्कर मिलाकर पीने से इसमें आराम होता है।
- गठिया व हाथ-पैरों में जलन होने पर करेले के रस की मालिश करना लाभप्रद होता है।
- किडनी की समस्याओं में करेले का उबला पानी व करेले का रस दोनों ही बेहद लाभकारी होते हैं। यह किडनी को सक्रिय कर, हानिकारक तत्वों को शरीर से बाहर करने में मदद करता है।
- हृदय संबंधी समस्याओं के लिए करेला एक बेहतर इलाज है। यह हानिकारक वसा को हृदय की धमनियों में जमने नहीं देता, जिससे रक्तसंचार व्यवस्थित बना रहता है, और हार्ट अटैक की संभावना नहीं होती।
- नींबू के रस के साथ करेले के रस को चेहरे पर लगाने से मुंहासे ठीक हो जाते हैं और त्वचा रोग नहीं होते।

राजकोट-अवधपुरी। मानव जीवन की रक्षा एवं मानव धर्म निभाने हेतु किये गये 'रक्त दान' जैसे महान कार्यों के लिए पुरुषार्थ युवक मंडल की ओर से 'कोरोना वॉरियर्स अवार्ड-2020' प्राप्त करते हुए ब्र.कु. शीतल तथा ब्र.कु. रीता।

व्यारा-गुज.। युवा दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. सारंग, ब्र.कु. अरुणा तथा डांस एवं फिटनेस ट्रेनर चेतन तिवारी।

देवबंद-गुज्जरवाड़ा(उ.प्र.)। सेवाकेन्द्र पर आध्यात्मिक चर्चा करने के पश्चात् संदीप शर्मा,एडवोकेट एवं देवबंद जिला उपाध्यक्ष,भाजपा,सहारनपुर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुधा बहन।

सूरतगढ़-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ के युवा प्रभाग द्वारा 'विश्व शांति के लिए युवा' प्रोजेक्ट के लॉन्चिंग कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रानी, कालवा नगरपालिका चेयरमैन ओमप्रकाश जी, युवा मारवाड़ी मंच के अध्यक्ष भरत रांका, अध्यापिका प्रगति यादव तथा अन्य।

मोतिहारी-बिहार। 35 वर्षों से मूल्य आधारित पत्रकारिता करने के लिए ब्र.कु. अशोक वर्मा को सुषमा फिल्म्स इंटरनेशनल द्वारा 'लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड' से सम्मानित करते हुए बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. रविन्द्र कुमार रवि तथा गांधी संग्रहालय के सचिव बृजकिशोर सिंह। साथ हैं सुषमा फिल्म्स से डी.के. आज़ाद, डी.ओ. अनिल कुमार, बी.एड. कॉलेज के डायरेक्टर डॉ. शंभूनाथ सिकरिया तथा मुंशी सिंह महाविद्यालय के स्नात्कोत्तर हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ. प्रो. अरुण कुमार।

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रूपये, तीन वर्ष 600 रूपये, आजीवन 4500 रूपये। विदेश - 2500 रूपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शांतिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

OM-21 - 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 27/01/2021 4:29 PM Page 6

सुकून किसमें

आज हम इन कर्मेन्द्रियों के वश हैं और इतना ज़्यादा वश हैं कि हम न चाहते हुए भी गलती पर गलती करते जा रहे हैं और जब परेशानी आ रही है तो डिप्रेशन-सा होता जा रहा है। क्या होगा, कैसा होगा जीवन में। अगर ये नहीं होगा तो हम क्या कर पायेंगे.....

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

मनुष्य की एक नेचर है कि वो एक समय में संसार में बहुत कुछ पाना चाहता है। माना उसको पूरा संसार चाहिए। जब वो संसार में सबसे ऊब जाता है, तो सबको छोड़ना चाहता है। फिर उसको कुछ नया चाहिए। सन्यास भी आनंद की एक खोज है, सुख की एक तलाश है। क्योंकि जितने भी संत व महात्मा बने, उन्होंने समाज से ऊबना या जिनके साथ हैं, उनके साथ असहज महसूस करना, फिर सहज जीवन के लिए तलाश करना यही उनकी समझ रही। लेकिन सुकून वहाँ भी नहीं।

तपस्यायें इतनी सालों तक करने के बाद भी सुकून नहीं मिला कि कहीं गलत तलाश तो नहीं कर रहे हैं या कहीं गलत प्रयास तो नहीं कर रहे हैं। ये दोनों बड़े विचारणीय प्रश्न हैं। क्या लगता है कि व्यक्ति को सुकून स्थान देता है या स्थिति देती है? कहावत भी है, कि खुशी के लिए काम करोगे तो कभी खुश नहीं रह सकते, लेकिन खुश होकर काम करोगे तो आपको उस कार्य में सुख मिलेगा। अब इस कहावत को अगर चरितार्थ करना है तो इसपर काम करना होगा। साधन, सुविधा, शौक, सम्पर्क सबके पास है, तो निश्चित रूप से सबको अपनी हसरतें पूरी करने का हक है। लेकिन इन हसरतों का कोई ओर छोर नहीं है। तो सुकून शब्द जब बना होगा तो उसको बोलने वाला या महसूस करने वाला उसको उच्चारण करता होगा तो क्या किसी साधन को सामने देखकर करता है या खाने वाली चीज़ को देखकर करता है या किसी स्थान को देखकर करता है। ऐसा तो नहीं है ना! चीज़ में सुकून नहीं है, खाने वाला सुकून महसूस कर रहा है। इसका मतलब सुकून हमारे स्वरूप में है। हम सुकून से ही बने हैं। लेकिन साधनों के या कहें देह और देह से लगी हुई चीज़ों से जुड़ने के कारण हमारा मन चीज़ों को इकट्ठा करने में लग गया जिसमें हमारे अंदर की शांति और सुकून जाते रहे और हमें पता भी नहीं चला। समय परिवर्तन हो रहा है।

आज भी हम सुधरे नहीं हैं। निश्चित रूप से बाहरी आकर्षण में हम जाते हैं। जाना अच्छा लगता है, सुखदायी लगता है, सुकून भरा लगता है, कारण, कि हमारे अंदर का सुकून बाहरी चीज़ों से रिफ़्लेक्ट होता है। लेकिन परमानेंट सुकून जो आत्मा की वास्तविक ज़रूरत है, वो तो सिर्फ और सिर्फ अपने आप को पहचानने से ही मिलती है। इस दुनिया के जितने भी साधन हैं, सम्पर्क हैं, वो सबकुछ आने वाले समय में काम नहीं आयेंगे। काम आयेगा तो सिर्फ सुकून। गहरी शांति। यही काम आयेंगे। लेकिन भाव अभी भी हमारा बदल नहीं रहा है। परमात्मा के सुनाये गये महावाक्यों में बार-बार इस स्थिति को दर्शाया गया है कि हम सभी मास्टर शांति के सागर हैं, मास्टर सुकून धारी हैं, मास्टर सर्वशक्तिमान हैं, बाकी साधन हमारे प्रयोग के लिए हैं।

आज हम इन कर्मेन्द्रियों के वश हैं और इतना ज़्यादा वश हैं कि हम न चाहते हुए भी गलती पर गलती करते जा रहे हैं और जब परेशानी आ रही है तो डिप्रेशन-सा होता जा रहा है। क्या होगा, कैसा होगा जीवन में। अगर ये नहीं होगा तो हम क्या कर पायेंगे। तो सबसे पहला कार्य हमको करना है कि अपने आप को जीतना, अपने मन को जीतना, ऑर्डर में बैठना, ऑर्डर में चलना, कर्मेन्द्रियों को ऑर्डर में चलाना। एक बार ऑर्डर किया तो वो शांत हो जायें। सुख से रहना हमारी नेचर है। लेकिन जब वो व्यक्ति राजा जनक की तरह होगा तो। जैसे राजा जनक के लिए कहा जाता है कि उन्होंने अपनी आत्मिक स्थिति या अपनी ज्योति को जगा लिया था इसलिए वे सदा सुख और शांति में रहते थे और राज्य कारोबार भी शांति से चलता था। मैं आत्मा राजा हूँ और कर्मेन्द्रियां हमारी कर्मचारी हैं, ये स्थिति ही हमें सुकून देगी हर परिस्थिति में। यही हमारी नेचर है, यही हम हैं, बस हमको यही करना है और सुकून से रहना है।

जीवन दर्शन

मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती

सर्वश्रेष्ठ योगी

उनके जीवन में एक चुम्बकीय शक्ति थी, वह इस कारण से थी कि उन्होंने सबको शिशुवत समझा। उनकी यह प्रत्यक्ष अनुभूति थी। व्यवहार उनका ऐसा था जैसे वो सचमुच में साक्षात जगदम्बा थीं,चाहे उनकी आयु कुछ भी हो। आप सोचिए, यह देह अभिमान खत्म हो गया ना! जब आयु का भान नहीं, पुरुष है, स्त्री है इसका भान नहीं, शत्रु है या मित्र है इसका भान नहीं। किसी भी चीज़ का देह अभिमान नहीं तो वह योगी होगा ना! बिना योग के देह अभिमान कैसे चला गया? योग की शक्ति सर्वश्रेष्ठ है। योगबल से ही विजय प्राप्त होती है। विजयमाला का मणका बनता है, तो यह मम्मा की ज़िन्दगी में प्रैक्टिकल दिखता था।

जबलपुर-नेपियर टाउन(म.प्र.)। 'यूथ फॉर ग्लोबल पीस प्रोजेक्ट-2021' के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ एवं नव ज्योति नशा मुक्ति केन्द्र के संयुक्त तत्वाधान में 'व्यसन मुक्त भारत अभियान रैली' निकाली गई। इस मौके पर ब्र.कु. प्रिया, ब्र.कु. लखन, ब्र.कु. रवि, ब्र.कु. ओमप्रकाश, शंकर शरण भाई सहित बड़ी संख्या में भाई बहनें उपस्थित रहे।

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दें

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न : मेरा नाम दर्शिका है। मेरी पूरी फैमिली पिछले दस वर्षों से इस विश्व विद्यालय से जुड़ी है। मेरा अब 11वीं क्लास में सब्जेक्ट लेने का समय है। मेरा मन आई.आई.टी. करने का है। मैं यदि आई.आई.टी. की पढ़ाई करती हूँ तो मुझे बाहर ही जाना पड़ेगा और जॉब भी बाहर ही करनी पड़ेगी। अब मेरी समस्या ये है कि मुझे कौन-सा सब्जेक्ट लेना चाहिए। लेकिन बाबा की धारणाओं को देखकर सी.ए. करने का सोच रही हूँ। जिससे मैं घर के शुद्ध वातावरण में ही रह सकूँ। मुझे बाबा की सेवाएं भी बहुत करनी हैं। कृपया मुझे सुजेस्ट करें कि मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर : आप तो महान आत्मायें हो। महान आत्मायें बनने वाले, पवित्र जीवन बनाने वाले बहुत कम हैं। आप घर में रहकर ही सी.ए. करें। और अच्छी स्टडी करें। सी.ए. का भी मान बहुत होता है और कमाई कम नहीं होती। बल्कि आई.आई.टी. वालों को तो नौकरी ढूंढनी भी पड़ती है। लेकिन सी.ए. तो करते ही अपना काम पहले ही चालू कर देते हैं। इसीलिए ये फील्ड आपके लिए बहुत अच्छा है। आपकी पवित्रता भी बहुत सुन्दर रहेगी। और आपकी जो धारणायें हैं जिसपर आप कायम रहना चाहती हैं उन पर भी आप कायम रह पायेंगी।

प्रश्न : मेरा नाम अमित है। मेरे पिता जी ने अपनी मेहनत से अपनी पूरी प्रॉपर्टी बनाई। उन्होंने अपने छोटे भाई को भी बहुत कुछ बनाने की कोशिश की लेकिन वो नहीं बन पाये। उनपर ही डिपेंडेंट रहे लेकिन अब वो मेरे पिता जी के बाद उनकी प्रॉपर्टी से हिस्सा चाहते हैं जिसपर उनका कोई हक नहीं है। उन्होंने हमारे ही घर में एक पूजा करवाई थी और उसमें उन्होंने कुछ पुजारियों को, तांत्रिकों को बुलाया था। कहा कि इससे घर में बरकत होगी। फिर पूजा के अंत में पूजा की समाप्ति के लिए उन तांत्रिकों ने सभी घर वालों के थोड़े-थोड़े बाल लिए। उसके पश्चात् हमारे पिता जी की तबीयत खराब रहने लगी। और थोड़े समय के बाद उनका देहांत हो गया। और हर नवरात्रि को घर की स्थिति बहुत ही दयनीय हो जाती है। ये स्थिति क्या है हम समझ नहीं पा रहे हैं और इससे निकलने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर : आप लोगों को शायद पता नहीं था कि ऐसे बाल आदि देने नहीं चाहिए। इससे उन्होंने तांत्रिक विद्या करा दी। आप घर में ऐसा करें कि पानी चार्ज करें यानी पानी को दृष्टि दें और 21 बार कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। और अपने घर में रोज़ एक बार छिड़क दिया करें। ये जो बैड् एनर्जी आपके घर में आ गई है वो तेजी से नष्ट हो जायेगी। अगर कोई और भी ये कर रहा हो तो उसके प्रभाव से भी आप मुक्त रहेंगे। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ 21 बार ये रोज़ अपने घर में बैठकर याद किया करें। ऐसे करेंगे मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मेरे अंग-अंग से शक्तियों की लाल किरणें फैलने लगी हैं। फिर से दोहरायें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ फिर ये शक्तियां और फैलने लगीं। फिर महसूस करेंगे कि इन शक्तियों का औरा मेरे चारों और फैलने लगा है। ऐसे अभ्यास करेंगे तो ये तंत्र-मंत्र की शक्ति इसके आगे बहुत छोटी है। वो तेजी से नष्ट हो जायेगी। और जब नवरात्रि शुरु होने जा रही हो तो उससे पहले विशेष एक घंटा योग करें। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। चार्ज करके पानी सुबह-शाम दोनों टाइम छिड़कने लगें तो ये इफेक्ट आपको आयेगा ही नहीं, ये उनको ही चला जायेगा जो आपको तंग कर रहे हैं।

प्रश्न : मेरा नाम एकता है। मैं छह महीने से योग का अभ्यास कर रही हूँ। मेरी माँ के एक महीने से घुटने में दर्द है। मैं उनको पानी चार्ज करके भी पिलाती हूँ। इसके अलावा मेडिसिन भी दे रहे हैं, लेकिन कोई इम्प्रूवमेंट नहीं हो रही है। कृपया बतायें कि क्या विशेष किया जाये?

उत्तर : आपको क्या करना है तेल को चार्ज कर लें। तेल को दृष्टि देकर 21 बार अभ्यास करें मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। फिर उससे सुबह-शाम घुटनों की मालिश करें और सवेरे-सवेरे अपने घुटनों को दस मिनट एनर्जी दें। और इसकी विधि यही है, हाथों को मलते हुए करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। तीन बार करके घुटनों पर हाथ रख दें। तो ये एनर्जी घुटनों के अन्दर चली जायेगी। और सारी चीज़ों को ठीक करेगी। तो ये तीनों काम तेल चार्ज करना, स्वमान का अभ्यास करना, और एनर्जी देना।

प्रश्न : मेरी शादी को चार साल हो गए हैं। और मेरे जो पति हैं वो कहीं पर भी जॉब में स्थिर नहीं हो पाते हैं। विदेश से भी उन्हें कई ऑफर मिले हैं कम्पनीज़ के द्वारा लेकिन पैरेंट्स नहीं जाने देते हैं। कहते हैं कि तुम विदेश जाकर क्या करोगे? हम खुद ही पैसे भेज देंगे। और कई बार जॉब लगती भी है तो ये खुद भी सन्तुष्ट नहीं हो पाते। और ये भी अच्छा नहीं लगता कि हम अपने माता-पिता से पैसे लेते रहें। तो मैं ऐसा क्या अभ्यास कर करूं जिससे मेरे पति को ऐसी जॉब मिले जिससे वो सन्तुष्ट भी हों और हमारे परिवार की आर्थिक स्थिति भी अच्छी बनी रहे?

उत्तर : पहले तो आपको ये समझना होगा कि उनकी अनस्टेबिलिटी का कारण क्या है। क्योंकि कई एडजस्ट न कर पाने के कारण किसी भी बात से जल्दी डिस्टर्ब हो जाते हैं, या फिर जॉब का टाइम उनके अनुसार ने हो तो इससे फिर वो जॉब छोड़ने का फैंसला ले लेते हैं। कईयों की ऐसी मनोस्थिति बनती है। मनुष्य को पहले ही कदम पर मनचाही चीज़ मिल जाये ये हरेक के लिए सम्भव नहीं होता। मेहनत करनी पड़ती है। तो आप रोज़ 21 दिन तक मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, इस स्वमान के साथ एक घंटा योग अभ्यास करें। ये स्वमान याद करके फिर अपने पति से बात करें। उनको अच्छे से समझाएं कि एक बार आपको स्टेबल होकर ये कार्य करना है। और आप जो योग करेंगी उसके वायब्रेशन आपके पति को अच्छाई की ओर ले चलेंगे। और वो भी आपकी बातों से सहमत हो जायेंगे।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

OM-21 - 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 27/01/2021 4:29 PM Page 7

योग नहीं लगता तो क्या करें....!!!

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

जिस उत्तम कोटि का योग लगना चाहिए, वो हमारा क्यों नहीं लगता? उसका कारण यह है कि या तो मान-शान की इच्छा है या वैर-घृणा है या किसी से द्वेष नाराज़गी है। जो भी समझते हैं कि हमारा योग नहीं लगता, वे अपने में देखिए तो इनमें से कोई न कोई कारण होगा। योग का अर्थ क्या है? पॉज़िटिव थिंकिंग। योग नहीं लगता माना आपमें श्रेष्ठ विचार, शुभ विचार नहीं चलते। शुभ विचार नहीं चलते माना, नेगेटिव या नकारात्मक विचार चलते हैं। नेगेटिव विचार क्यों चलते हैं? असन्तुष्टता के कारण। अगर आप किसी से रूठे हैं तो आप यह समझ लीजिए कि आप उससे असन्तुष्ट हैं। देखिये, सन्तुष्टता न होने के कारण योग खत्म। उस व्यक्ति से नाराज़ होकर हमने योग गंवा दिया। भले ही उसके कारण हमें स्थूल वस्तु या वैभव का नुकसान हुआ होगा लेकिन नाराज़ होकर आप योग को खो बैठे, परमात्मा के साथ का सम्बन्ध और सुख खो बैठे। देखिए, यह कितना बड़ा नुकसान है। एक सन्तुष्टता का गुण छोड़ने के कारण, रुष्ट या क्रुद्ध होने के दुर्गुण के कारण, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, वैर इत्यादि सारी रावण की सेना आ जाती है। दुर्गुण आपमें डेरा डाल देते हैं। कई बार, दूसरे कोई हमें असन्तुष्ट नहीं करते लेकिन हम अपने आप से ही असन्तुष्ट हो जाते हैं। हम इसलिए असन्तुष्ट हैं क्योंकि हमारा योग ठीक नहीं लग रहा है, हम ज्ञान में तीव्र वेग से नहीं चल रहे हैं। बैठे हैं योग करने, खुद ही संकल्प कर रहे हैं कि योग नहीं लग रहा है। अरे भाई, योग लगाओ ना, उसके बदले यह संकल्प क्यों कर रहे हो कि योग नहीं लग रहा है? बाबा ने भी अव्यक्त वाणी में बताया है कि एक पक्षी था, अपने पंजों से डाली को पकड़कर बैठा था और कहता था कि मुझे छुड़ा दो, मुझे उड़ा दो। उड़ता खुद नहीं था लेकिन कहता था कि मुझे इस डाली से छुड़ा दो। ऐसे हम भी कह रहे हैं। खुद योग नहीं लगा रहे हैं, योग में बैठकर कहते हैं कि मेरा योग नहीं लग रहा है। अन्धकार को मिटाने का तरीका है प्रकाश को लाओ। प्रकाश आने से अन्धकार अपने आप मिट जायेगा। आप यह नहीं सोचो कि मेरा योग नहीं लग रहा है। आप यह सोचो कि मैं आत्मा हूँ, मैं अनादि स्वरूप हूँ, मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ। जब ऐसे पॉज़िटिव थिंकिंग करते जायेंगे तब योग की सीढ़ी चढ़ते जायेंगे और अनुभव भी करते जायेंगे। चलो, अगर योग नहीं भी लगेगा तो कोई हर्जा नहीं, कोई नेगेटिव विचार तो नहीं चलेंगे ना! पॉज़िटिव थिंकिंग से विकल्प या व्यर्थ संकल्पों से बच जायेंगे ना! पूरा प्रकाश नहीं होगा, उषा काल तो होगा ना! जैसा सोचोगे, वैसे बनोगे। इसलिए अपने से भी असन्तुष्ट होना गलत है। यह बात अलग है कि आप थके हुए हैं, तबीयत ठीक नहीं है इसलिए योग नहीं लग रहा है आप तो बाबा के बच्चे हैं, बाबा ने आपको स्वीकारा है। हम बाबा की सर्वश्रेष्ठ रचना हैं, कोटों में कोई और कोई में भी कोई हैं। हमें अपने से क्यों असन्तुष्ट होना चाहिए? बाबा ने कहा है कि परमधाम की यात्रा भी योग है, स्वदर्शन चक्र घुमाना भी योग है तो यात्रा करो, चक्र घुमाओ।

यह विषय तो बहुत बड़ा है लेकिन संक्षेप में मैं यही कहता हूँ कि इसी तरह से मैत्री भाव है, मित्रता भाव है, अपकारी पर भी उपकार करने का शुभ भाव है। अगर यह शुभ भावना हम बनाये नहीं रखेंगे तो मन में नेगेटिव भाव स्थान बना लेगा। किसी अच्छी चीज़ में कंकड़ या मक्खी पड़ जाये तो, भले ही वह कितने भी पैसे खर्च करके बनवायी गयी हो, खाने योग्य नहीं रहेगी। आप उसको फेंक देंगे। ऐसे ही अलौकिक जीवन में अगर आप के विचारों में ऐसी बातें आ गयीं तो निश्चित रूप से आप आगे नहीं बढ़ पायेंगे। इसलिए जिनसे भी हमारा सम्बन्ध-सम्पर्क है, जिनसे हमारा काम पड़ता है उन सबसे अगर हम प्रेम-प्यार से, मित्रता से, कल्याणकारी और शुभ भाव से, मधुरता और नम्रता से व्यवहार करते हैं तो हमारा मन अच्छा रहेगा और योग भी अच्छा लगेगा।

जब कोई गलत बोलता है तो उसको हम प्यार से बता सकते हैं, समझा सकते हैं। अगर वो नहीं समझता है तो हम क्यों उसके पीछे अपनी अवस्था खराब करें? धर्मराज बाबा बैठा है, मालिक वह है। हरेक को वह देखता है, कौन राइट है, कौन रॉन्ग है। बाबा ने कहा है कि जो ज्ञान में आकर गलत करता है, पाप करता है, उसको सौ गुणा दण्ड मिलता है। अगर आप उसकी भलाई के लिए दोस्त के नाते, भाई के नाते सलाह देना चाहते हैं, दे सकते हैं। हमने देखा है, बहुत बार क्या होता है, हम मित्र को सलाह देने के बहाने ज़िद्द पकड़ बैठते हैं, वह नहीं बदलता है तो बदला लेने का सोचते हैं कि इसने हमारी बात नहीं मानी, इसको हम सबक सिखा देंगे। कई बार ऐसा भी होता है कि जिसको आपने अपना मित्र समझकर राय दी, वह गलत समझकर आपका दुश्मन बन जाता है। इससे और ही दोनों की अवस्था बिगड़ जाती है और पुरुषार्थ रुक जाता है। दोनों का मित्रभाव खत्म हो जाता है। बाबा ने हमें बताया भी है कि जो जैसा करता है, वैसा पाता है। तो हम उसका विरोध करके क्यों अपनी स्थिति और समचित्त को खराब करें? मेरा निवेदन यह था कि इन दोनों बातों को भी हम सामने रखें कि हमारे सब मित्र हैं, हम सबका भला चाहते हैं, उस भलाई के लिए हम ज्ञान की, योग की या धारणा की बात सुनाते हैं तो ठीक है, लेकिन हमारी मित्रभावना नहीं टूटे, हमारे में कोई वैर, विरोध, बदला लेने की भावना न आये। अगर किसी के प्रति हमारे मन में ईर्ष्या भाव या द्वेष भाव पैदा होता है तो यह मैत्री भाव नहीं है। यह दूसरों को सन्तुष्ट करने वाली बात है भी नहीं। मान-शान की इच्छा जो हम करते हैं, यह तभी आती है जब इन दो - सन्तुष्टता और मैत्रीभाव का अभाव होता है। अगर हम इन दो बातों पर ध्यान रखते हैं तो मेरे ख्याल में अन्य सब विषयों में सहज ही हम पास हो जायेंगे।

> **"कोई भी कार्य करने से पहले हमें उसके बारे में पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। फिर उसे करने के लिए योग्य विधि का होना व उसको करने की वजह या मकसद स्पष्ट होना ज़रूरी है। साथ-साथ समय का ज्ञान व मन में संतुष्टता का गुण भी धारण होना चाहिए। तभी तो आप अपनी बुद्धि को एक जगह पर एकाग्र कर सकेंगे। अन्यथा सोचने का प्रवाह आपको कहीं ओर ही ले जायेगा।"**

भीमावरम-आ.प्र.। इनर व्हील क्लब की 40वीं वर्षगांठ पर आयोजित कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रेवती का क्लब के सदस्यों द्वारा सम्मान किया गया। इस अवसर पर उपस्थित हैं क्लब प्रेसीडेंट जयश्री जी, सेक्रेट्री विजयलक्ष्मी जी, के.जी.आर. कॉलेज की प्रिन्सीपल रानी जी, बारडोली स्कूल की डायरेक्टर्स श्रीदेवी जी व अम्माजी तथा क्लब के अन्य सदस्य।

भुवनेश्वर-बी.जे.बी. नगर। सूर्यखीत्रा फाउंडेशन ऑफ एजुकेशनल एंड चैरिटेबल ट्रस्ट की 13वीं एनुअल मीट एवं फैलिसिटेशन सेरेमनी 2021 में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. तपस्विनी बहन एवं ब्र.कु. अपर्णा बहन को 'कोरोना वॉरियर्स' अवॉर्ड से सम्मानित करते हुए डॉ. प्रसन्ना कुमार पटसानी,पूर्व सांसद। साथ हैं डॉ. बिपिन बिहारी मिश्रा,चेयरमैन,सूर्यखीत्रा फाउण्डेशन तथा अन्य।

मैसूर-कर्नाटक। नव वर्ष के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में शरीक हुए रोहिणी सिंधुरी,डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर, ए. नागेन्द्र,विधायक, एच.वी. राजीव,चेयरमैन,मैसूर अर्बन डेवलपमेंट ऑथोरिटी,मैसूर, डॉ. नतेश,कमिश्नर,एम.यू.डी.ए., सविता,सेक्रेटी,एम.यू.डी.ए., श्रीहरि,चेयरमैन,जी.एस.एस. ग्रुप ऑफ कंपनीज़, जयसिम्हा,ज्वाइंट डायरेक्टर,मैसूर सिटी कॉर्पोरेशन, डॉ. मंजूनाथ,ऑर्थोपेडिक सर्जन व चेयरमैन,मनसा हॉस्पिटल, डॉ. शिल्पा,असिस्टेंट प्रो.,जे.एस.एस. मेडिकल कॉलेज, डॉ. नंदलाल,डेंटल सर्जन, डॉ. रवि पुराणिक,कंसलटेंट फीज़िशियन,अपोलो हॉस्पिटल्स, प्रभु,वाइस प्रेसीडेंट,एडवोकेट्स एसोसिएशन,मैसूर, मि.अग्रवाल,डी.आर.एम.,मैसूर, डॉ. ए.आर. सीताराम,फाउण्डर प्रेसीडेंट,परमहंस योगा थैरेपी सेंटर तथा डॉ. गीता सीताराम,राइटर एंड म्यूज़ीशियन। ब्रह्माकुमारीज़ की उपक्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. लक्ष्मी दीदी द्वारा सभी मेहमानों का स्वागत व सम्मान किया गया।

वर्धा-महा.। महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा,महाराष्ट्र के 24वें स्थापना दिवस एवं चतुर्थ दीक्षांत महोत्सव के अवसर पर ब्र.कु. मेधावी शुक्ला को उनके अनुसंधान कार्य 'अहिंसक जीवन शैली में राजयोग का अवदान परंपरा स्वरूप प्रयोग और मीडिया की भूमिका' के लिए डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधि प्रदान की गई।

गया-सिविल लाइन। नव वर्ष के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में कैंडल लाइटिंग करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शीला दीदी तथा ब्र.कु. बहन एवं भाई।

मॉस्को-रशिया। नये वर्ष के आगमन पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में केक काटते हुए वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुधा दीदी, ब्र.कु. विजय तथा अन्य।

राँची-झारखण्ड। नव वर्ष के आगमन पर आयोजित कार्यक्रम में कैंडल लाइटिंग करते हुए रितेश गुप्ता,समाजसेवी, सुभाष चन्द्र गर्ग,डी.जी.एम.,नाबार्ड, ब्र.कु. निर्मला, अमरजीत जी,मैनेजर,हुंडई मोटर तथा विशाल तिवारी,एडवोकेट,हाई कोर्ट।

OM-21 - 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 27/01/2021 4:29 PM Page 8

राष्ट्रीय युवा दिवस पर ज्ञानसरोवर से जानकी पार्क तक 'पीस मार्च'

युवाओं की वृत्ति सकारात्मक बनाना इस प्रोजेक्ट का उद्देश्य

ज्ञानसरोवर-मा.आबू। राष्ट्रीय युवा दिवस (स्वामी विवेकानंद जयंती) पर ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञानसरोवर परिसर में भव्य कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस मौके पर ज्ञानसरोवर से पीस मार्च निकाला गया जिसका समापन जानकी पार्क में हुआ। शांति यात्रा को हरी झण्डी दिखाकर शुभारंभ करते हुए ज्ञानसरोवर निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. निर्मला दीदी ने कहा कि आज युवाओं की वृत्ति नकारात्मकता की ओर बढ़कर हिंसात्मक होती जा रही है, ऐसे में उन्हें शांति का संदेश देना बहुत ज़रूरी है। जानकी पार्क के मंच से वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. सूर्य ने स्वामी विवेकानंद जी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वामी जी की आध्यात्मिकता के प्रति गहरी रुचि थी। वे खास मेडिटेशन करते थे। अमेरिका के शिकागो शहर में विश्व धर्म सम्मेलन में जब वे बोल रहे थे 'मेरे भाइयों एवं बहनों' तो बोल के साथ-साथ पवित्र वायब्रेशन्स भी काम कर रहे थे। यूथ विंग के प्लानिंग कमेटी मेम्बर ब्र.कु. जीतू ने 'यूथ फॉर ग्लोबल पीस' प्रोजेक्ट के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि अलग-अलग महीनों में क्या-क्या प्रोग्राम होने हैं। अजमेर से आईं यूथ विंग की प्लानिंग कमेटी मेम्बर ब्र.कु. रूपा ने राजस्थान में हो रही युवा सेवाओं के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर स्वामी जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। लगभग 150 युवा भाई-बहनों ने इस शांति यात्रा में भाग लिया। इसका कुशल संचालन यूथ विंग के प्लानिंग कमेटी मेम्बर ब्र.कु. वीरेन्द्र ने किया। ब्र.कु. दिलीप और ब्र.कु. विजय ने स्वामी विवेकानंद जी का ड्रेस पहन कर यात्रा की शोभा बढ़ायी। भारत देश का तिरंगा झण्डा भी पीस मार्च की शोभा रहा।

भारत की सनातन संस्कृति समस्त संसार की पथ प्रदर्शक

झोझूकलां-कादमा(हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज़, हिन्दुस्तान स्काउट्स एंड गाइड्स, ग्रामीण विकास परिषद् एवं दादरी योगासन स्पोर्ट्स एसोसिएशन के संयुक्त तत्वाधान में राष्ट्रीय युवा दिवस(स्वामी विवेकानंद जयंती) के अवसर पर स्थानीय ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र में 89वां विशाल 'रक्तदान शिविर' एवं

'युवा और समाज निर्माण' विषय पर आयोजित विचार गोष्ठी में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. वसुधा ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने मात्र 39 वर्ष की आयु में देश और विदेश में भारत की सत्य सनातन संस्कृति की पताका को फहराया। वे युवकों को सदा पुरुषार्थ, योग साधना और सत्य के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते रहे। स्पोर्ट्स एसोसिएशन के जिला अध्यक्ष बिशन सिंह आर्य ने कहा कि भारत की सनातन संस्कृति सदैव दुनिया का पथ प्रदर्शित करती रही है। आज भी योग, आयुर्वेद के माध्यम से दुनिया शांति और स्वास्थ प्राप्त करने के लिए भारत की ओर उन्मुख है। ब्र.कु. सुनील, कप्तान सूरज भान, आर्यन कोचिंग सेंटर के संचालक मास्टर रविंद्र सांगवान ने भी युवकों को समाज निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका से परिचित कराते हुए कहा कि नेत्र जांच शिविर, रक्तदान शिविर, योग शिविर यह सभी हमें मानव हित, समाज हित व राष्ट्र हित के कार्यों से जोड़ते हैं। मास्टर रविंद्र सांगवान व मास्टर संजू ने सभी महानुभावों का स्काउट्स का प्रतीक चिन्ह स्कार्फ व तिरंगा पट्टी पहना कर स्वागत किया। शिविर संयोजक मास्टर सुनील तिवाला व बिशन सिंह आर्य ने बताया कि इस अवसर पर 48 लोगों ने रक्त दान करके समाजहित में कार्य करने का संकल्प लिया है। दीप प्रज्वलन में नरेश कुमार, होंडा ग्रुप की ओर से रवि कुमार आदि शामिल रहे। अंत में सभी रक्तदाताओं और मेहमानों को स्मृति चिन्ह व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

किसानों की उन्नति में संस्था की व्यापक कार्य योजना सराहनीय

अयोध्या-फैजाबाद(उ.प्र.)। राष्ट्रीय किसान दिवस पर वजीरबाग सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित 'किसान संगोष्ठी' में ग्राम विकास अधिकारी ज्योति बहन ने कहा कि खेती में आने वाली समस्याओं को दूर कर किसानों को उपज की समुचित लागत उपलब्ध कराना हमारा लक्ष्य है। हमें बहुत खुशी है कि परम्परागत यौगिक विधि द्वारा कम लागत में उन्नत पैदावार के लिए

ब्रह्माकुमारी संस्था व्यापक कार्य योजना बना रही है। स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शशी ने कहा कि अन्न का मन और मन का अन्न के ऊपर गहरा प्रभाव पड़ता है, अतः श्रेष्ठ एवं सुखद भावनाओं के साथ, प्रकृति के प्रति प्रेम और आदर के भाव को जागृत करते हुए हमें अपनी खेती को उन्नत बनाना होगा। ब्र.कु. डॉ. फूलचन्द ने किसानों को शाश्वत यौगिक खेती के बारे में विस्तार से जानकारी दी। ब्र.कु. कमलापति भाई ने संस्था के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा खेती एवं ग्राम विकास के क्षेत्र में की जा रही सेवाओं के बारे में जानकारी दी। ब्र.कु. शीलू बहन ने संस्था द्वारा किसानों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने और उन्नत पैदावार हेतु सिखाए जाने वाली राजयोग की प्रयोगात्मक विधि से अवगत कराया। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. रामजीत भाई ने किया।

युवाओं की ऊर्जा विश्व शांति हेतु उपयोग हो

ग्वालियर-लश्कर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के युवा प्रभाग द्वारा राष्ट्रीय युवा दिवस पर 'विश्व शांति के लिए युवा' विषय पर आयोजित भव्य कार्यक्रम में ब्र.कु. प्रहलाद ने सभी को 'यूथ फॉर ग्लोबल पीस' प्रोजेक्ट का उद्देश्य बताते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ के युवा प्रभाग द्वारा संचालित इस नए प्रोजेक्ट

का प्रयास है कि युवाओं की ऊर्जा विश्व शांति हेतु उपयोग हो, युवाओं को हर तरह से सक्षम बनाना ताकि वे राष्ट्र के काम आ सकें। युवाओं को केवल समाधान देना नहीं, बल्कि समाधान का हिस्सा बनाना इस अभियान का उद्देश्य है। यह अभियान इस वर्ष के अगस्त मास तक चलेगा। विधायक प्रवीण पाठक,दक्षिण ग्वालियर ने ब्रह्माकुमारी संस्थान की सराहना करते हुए कहा कि आज युवा प्रभाग के द्वारा जिस प्रोजेक्ट का शुभारंभ हो रहा है इसका लाभ इस क्षेत्र के सभी युवाओं को मिलेगा। स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आदर्श बहन ने सभी को परमात्मा का दिव्य संदेश दिया तथा राजयोग मेडिटेशन द्वारा गहन शांति की अनुभूति कराई। इसके पश्चात् ग्वालियर जिले में सेवारत लगभग पच्चीस समाज सेवी संस्थाओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन ब्र.कु. डॉ. गुरचरण ने किया तथा ब्र.कु. प्रहलाद ने आभार व्यक्त किया।

दिखावे में न जीयें आज के युवा

जमशेदपुर-झारखण्ड। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा राष्ट्रीय युवा दिवस पर आयोजित ऑनलाइन कार्यक्रम में ब्र.कु. आभा ने स्वामी विवेकानंद के जीवन से जुड़ी कई प्रेरणादायक

घटनाएं सुनायीं। संस्था के युवा प्रभाग की ओर से 'वैश्विक शांति के लिए युवा' विषय को प्रोजेक्ट के ज़रिये दिखाया गया। टाटा स्टील एच.आर.एम. की पूर्व प्रमुख ज्योति पांडेय ने कहा कि युवाओं को स्वयं के अंदर की अच्छाई पर ध्यान देने की ज़रूरत है। तुलनात्मक वृत्ति के कारण आज युवा दिखावे में जी रहे हैं, जो उनके पतन का कारण बन रहा है। ब्रह्माकुमारीज़ कोल्हान प्रमंडल की प्रमुख ब्र.कु. अंजु दीदी ने कहा कि ज़्यादातर युवाओं में धैर्य की कमी हो जाती है।

शांति को जीवन में महत्व देने से इसे ठीक किया जा सकता है। उन्होंने मेडिटेशन के ज़रिये सभी को शांति की शक्ति का अनुभव कराया।

वर्तमान समय आध्यात्मिकता से मिलेगी नई दिशा

नेपाल-मधेपुरा। ब्रह्माकुमारीज़ के नवनिर्मित 'सुख शांति भवन' के उद्घाटन पर आध्यात्मिक प्रवचन एवं भव्य स्नेह मिलन समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. भगवती दीदी ने कहा कि नवनिर्मित सुख शांति भवन में मानव जीवन में कार्य कुशलता, व्यवसायिक दक्षता, बौद्धिक विकास एवं विभिन्न विषयों के साथ आपसी स्नेह, सत्यता, पवित्रता, अहिंसा आदि मानवीय मूल्यों का पाठ सभी को पढ़ाया जाएगा। स्थानीय शाखाओं में दस वर्षों से अध्यात्म के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यकलापों व इसकी सार्थकता के बारे में संस्थान के सीमावर्ती क्षेत्र प्रभारी ब्र.कु. रंजू दीदी ने विस्तार पूर्वक जानकारी दी। ब्र.कु. दीपक, राजबिराज ने कहा कि जब तक जीवन में आध्यात्मिकता नहीं अपनाते, तब तक जीवन में मानवीय नैतिक मूल्य नहीं आ सकते। विधायक प्रो. चंद्रशेखर यादव ने कहा कि वर्तमान समय में समाज के हर नर-नारी एवं युवाओं

को आध्यात्मिकता द्वारा ही नई दिशा मिलेगी। ब्र.कु. देवान,मा.आबू ने कहा कि 1937 में सिंध हैदराबाद में ओम मंडली के रूप में एक छोटा-सा पौधा परमात्मा ने लगाया था। आज वह प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के रूप में विश्व के 150 देशों में एक वटवृक्ष की भांति सर्व मानव आत्माओं को सुख शांति की छाया दे रहा है। ब्र.कु. संगीता दीदी,उपक्षेत्रीय निदेशिका,पटना, बिहार ने कहा कि परमात्मा शिव ज्ञान का कलश माताओं, बहनों को देकर उनके द्वारा फिर से संसार में फैले आसुरी संस्कारों का नाश करा रहे हैं। ब्र.कु. शिखा,पीएम टीवी,मा.आबू ने कहा कि राजयोग की नित्य शिक्षा से हम अपनी कर्मेन्द्रियों को संयमित कर व्यवहार में निखार ला सकते हैं। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. किशोर ने किया। कार्यक्रम में नेपाल ऑयल निगम के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर हरी प्रसाद सिंह, समाजसेवी डॉ. भूपेन्द्र मधुपुरी, राष्ट्रीय इस्पात नि.लि. के उप महाप्रबंधक नरेश कुमार सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे।

RNI NO RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/21-23, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2021-23, Posting on 12th TO 14th and 22nd TO 24th each month, published on 12th Jan, 2021
स्वामी - आर.ई.आर.एफ. (मीडिया विंग), प्रकाशक - गंगाधर नरसिंघानी, मुद्रक - डी.बी. कॉर्प.लि. द्वारा भास्कर प्रिन्टिंग प्रेस, डी.बी. कॉर्प.लि.,शिवदासपुरा, टोंक रोड,जयपुर से मुद्रित एवं ओम शान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शांतिवन-राज. से प्रकाशित, सम्पादक - गंगाधर नरसिंघानी।
कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन, आबू रोड(राज.)- 307510
See Latest News - www.omshantimedia.org